तुलसी एहि संसार में, भाँति भाँति के लोग।
सब सों हिल मिल बोलिए, नदी नाव संयोग॥ ६ ॥

काम, क्रोध, मद, लोभकी, जौ लौं मन में खान।
तौं लौ पंडित मूरखौ, तुलसी एक समान॥ ७॥

आवत ही हर्षे नहीं, नैनन नहीं सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइए, कञ्चन बरसे मेह॥ ८॥

तुलसी कबहुँ न त्यागिए, अपने कुल की रीति।
लायक ही सो कीजिए, ब्याह, बैर अरु प्रीति॥ ९॥

बिना तेज के पुरुष की, अवशि अवज्ञा होय।
आगि बुझे ज्यों राखको, आपु छुवै सब कोय॥ १० ॥

कठिन शब्दार्थ :

स्वाति-सलिल = स्वाति वर्षा का जल; प्रबीन = प्रवीन;
पाहन = पत्थर; काया = शरीर; तनक = थोड़ा; धूरि = धूल, गर्द;
कञ्चन = सोना; मेह = मेघ, बादल; अवज्ञा = अनादर, अपमान।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) तुलसीदास किस पर विश्वास करते हैं?
२) तुलसीदास किसको आराध्य देव मानते हैं?
३) संत का स्वभाव कैसा होता है?
४) तुलसीदास काया और मन की उपमा किससे देते हैं?
५) मधुर वचन से क्या मिटता है?
६) पंडित और मूर्ख एक समान कब लगते हैं?
७) तुलसीदास कहाँ जाने के लिए मना करते हैं?
८) बिना तेज के पुरुष की अवस्था कैसी होती है?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) तुलसीदास की रामभक्ति का वर्णन कीजिए।

२) तुलसीदास के अनुसार संत के स्वभाव का वर्णन कीजिए।

३) तुलसीदास ने मधुर वचन न महत्व का कैसे वर्णन किया है?

४) तुलसीदास ने नदी और नाव का प्रयोग किस संदर्भ में किया है?

५) तुलसीदास कुल रीति के पालन करने के सम्बन्ध में क्या कहते हैं?

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए :

१) तुलसी काया खेत है, मनसा भयौ किसान।
पाप पुण्य दोउ बीज हैं, बुवै सौ लुनै निदान॥

२) काम, क्रोध, मद, लोभकी, जौ लौं मन में खान।
तौं लौ पंडित मूरखौ, तुलसी एक समान॥

* * * * * *

३. मीराबाई के पद

कवयित्री परिचय :

मध्यकालीन कृष्णभक्ति काव्यधारा की श्रेष्ठ कवयित्री मीराबाई का जन्म राजस्थान में मेड़ता के पास कुड़की (चौकड़ी) नामक स्थान में सन् १४९८ में हुआ था। मीराबाई जोधपुर के महाराजा राव रत्नसिंह की पुत्री और उदयपुर के राजकुमार भोजराज की पत्नी थीं। विवाह के थोड़े समय के बाद ही वे विधवा हो गयीं और बचपन की कृष्णभक्ति की प्रवृत्ति पुनः जाग उठी। आपकी मृत्यु सन् १५४६ में हुई। आपकी प्रमुख रचनाएँ 'गीत गोविंद की टीका', 'नरसी जी रो माहेरो', 'राग-गोविंद', 'सोरठ संग्रह', 'मीरा की पदावली', आदि हैं। मीराबाई की काव्य भाषा राजस्थानी, गुजराती और ब्रज मिश्रित है।

प्रस्तुत पदों में मीराबाई जी ने कृष्ण को अपना प्रियतम माना है। दर्द और भावों की अत्यंत तीव्रता मीराबाई के काव्य की विशेषता है। आपने अपने ऊपर होनेवाले अनाचारों का भी परिचय दिया है। मीराबाई की भक्ति दैन्य एवं माधुर्यभाव की है ।

१) म्हांरां री गिरधर गोपाल दूसरां न कूयां।
दूसरां न कोवां साधां सकल लोक जूयां।
भाया छांड्या बंधां छांड्या सगां सूयां।
साधां संग बैठ बैठ लोक लाज खूंया।
भगत देख्यां राजी ह्यायां जगत देख्यां रूयां।
असवां जल सींच सींच प्रेम बेल बूयां।
राणा विषरो प्याला भेज्यां पीय मगन हूयां।
अब तो बात फैल पड्या जाग्णां सब कूयां।
मीरां री लगन लग्यां होना होजू हूँया।

२) भज मन चरण कंवल अविनासी ।।टेक।।
जेताइ दीसां धरनि गगन मां ते ताईं उठि जासी।
तीरथ बरतां ग्यांन कथन्तां कहा लयां करवत कासी।
या देही रो गरब ना करना माटी मा मिल जासी।
यो संसार चहर री बाजी साँझ पड्या उठ जासी।
कहा भयां था भगवां पहर्‌या, घर तज लयां संन्यासी।
जोगी होय जुगत ना जाना उलट जनम रां फाँसी।
अरज करूंस अबला स्याम तुम्हारी दासी।
मीरां रे प्रभु गिरधर नागर कांट्या म्हांरी गांसी।।

कठिन शब्दार्थ :

कूयाँ = कोई; जूयां = देख लिया है; भाया = भाई; साधां = साधु; रूयां = रोई; मगन = प्रसन्न; अविनासी = कभी न नाश होनेवाला; जेताई = जितना; दीसाँ = दिखाई देता है; तेताई = उतना ही, सब का सब; उठि जासी = नष्ट हो जायेगा; चहर री बाजी = चिड़ियों का खेल है; जुगत = युक्ति; गांसी = बन्धन।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) मीराबाई ने किसे अपना आराध्य माना?
२) मीराबाई ने किसके लिए सारा जग छोड़ा?
३) मीराबाई ने किसकी संगति में बैठकर लोक-लाज छोड़ा?
४) मीराबाई ने कृष्ण प्रेम को किससे सींचा?
५) विष का प्याला किसने भेजा था?
६) मीराबाई की लगन किसमें लगी है?
७) श्रीकृष्ण के चरणकमल कैसे हैं?
८) किसका घमंड नहीं करना चाहिए?
९) यह संसार किसका खेल है?
१०) मीराबाई किन बन्धनों को नष्ट करने के लिए प्रार्थना करती हैं?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) मीराबाई की कृष्णभक्ति का वर्णन कीजिए।
२) मीराबाई ने जीवन के सार तत्व को कैसे अपना लिया?
३) मीराबाई ने जीवन की नश्वरता के सम्बन्ध में क्या कहा है?
४) मीराबाई सांसारिक बन्धन से क्यों मुक्ति चाहती हैं?

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए :

१) म्हांरां री गिरधर गोपाल दूसरां न कूयां।
दूसरां न कोवां साधां सकल लोक जूयां।
भाया छांड्या बंधां छांड्या सगां सूयां।
साधां संग बैठ बैठ लोक लाज खूंया।
भगत देख्यां राजी ह्वयां जगत देख्यां रूयां।

IV योग्यता विस्तार :

मीराबाई की तुलना कन्नड की कवयित्री अक्कमहादेवी के साथ कीजिए।

* * * * * *

४. शरण वचनामृत

शरणों का परिचय :

बारहवीं शती के वचन साहित्य को कन्नड़ साहित्य के विकास में सुवर्णयुग माना जाता है।

महात्मा बसवेश्वर ने विश्वमानव धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए आध्यात्मिक और दार्शनिक योगी अल्लमप्रभु जी की अध्यक्षता में 'अनुभव मंटप' की स्थापना की। सभी मुमुक्षु, संतों को इस अनुभव मंटप ने आकर्षित किया।

(१) अल्लमप्रभु बारहवीं शती के शिवशरणों में सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। आप अनुभव मंडप के प्रथम अध्यक्ष थे। 'हरिहर का प्रभुदेव रगळे' और चामरस का 'प्रभुलिंग लीले' तथा अन्य शिवशरणों के वचनों में आप का जीवन परिचय मिलता है। वैराग्य मूर्ति, अनुभावी अल्लमप्रभु कर्म, भक्ति एवं ज्ञान के प्रतिपादक थे।

(२) महात्मा बसवेश्वर जी का जन्म कर्नाटक के बिजापुर जिले के इंगळेश्वर-बागेवाड़ी अग्रहार में शैवोपासक ब्राह्मण दंपति मादरस, मादलाबिंका के यहाँ हुआ था। आपका जीवनकाल सन् ११०५ से ११६७ तक माना जाता है। 'कायक ही कैलास' (Work is Worship) के द्वारा सामाजिक क्रांति लाकर शारीरिक परिश्रम से जीवन यापन करने की पद्धति को महत्व दिया। ये विचार विश्वज्योति बसवेश्वर जी के सामाजिक सुधार के मूल मंत्र माने जाते हैं।

(३) अक्कमहादेवी जी अनुभव मंडप की महिला शिवशरणियों में सर्वश्रेष्ठ शिवशरणी मानी जाती हैं। आपने शिमोगा जिले के उड़तड़ी

ग्राम में शिवभक्त दम्पति निर्मल शेट्टी और माता सुमती की पुत्री के रूप में जन्म लिया। आपने उड़तड़ी विरक्तमठ के पट्टाध्यक्ष जी से शिवदीक्षा प्राप्त करके श्रीशैल के चन्नमल्लिकार्जुन देव के कीर्तन-ध्यान में सदा मग्न रहती थीं। आपके वचनों का अंकित नाम श्री चन्नमल्लिकार्जुन देव है।

शरणों के अपने-अपने अनुभव ही 'वचन' के रूप में अभिव्यक्त हुए। उन्होंने जाति, कुल और लिंग के भेद को जड़ से मिटा दिया और ईश्वरार्पण भाव एवं निष्काम कर्म 'कायक' को प्रधानता दी। धार्मिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में जो समग्र क्रांति हुई, वह कन्नड़ साहित्य क्षेत्र में अनोखी है। आध्यात्मिक योगी अल्लमप्रभु की माया, महात्मा बसवेश्वर के अनुभाव और शिवशरणी अक्कमहादेवी के लोकानुभव इन वचनों में मिलते हैं।

प्रस्तुत वचनों को बसव समिति, बेंगलूरु द्वारा संपादित पुस्तक से लिया गया है। हिन्दी भाषा के माध्यम से कर्नाटक के शिवशरणों एवं वचनकारों के तत्वों से छात्रों को अवगत कराना इसका प्रमुख उद्देश्य है।

१) कहते हैं कनक माया है, कनक माया नहीं
कहते हैं कामिनी माया है, कामिनी माया नहीं
कहते हैं माटी माया है, माटी माया नहीं
मन के आगे जो चाह है, वही माया है, गुहेश्वर।

आध्यात्मयोगी अल्लमप्रभु

२) ज्ञान से अज्ञान दूर होता है,
ज्योति से तमंध दूर होता है,
सत्य से असत्य दूर होता है,
पारस से लोहत्व दूर होता है,
आपके शरणों के अनुभाव से
मेरा भव छूट गया, कूडलसंगम देवा।

महात्मा बसवेश्वर

३) पर्वत पर बसाकर घर, जंगली जानवरों से क्या डरना?
सागर किनारे बसाकर घर लहरों से क्या डरना?
हाट में बसाकर घर, शोरगुल से क्या डरना?
चन्नमल्लिकार्जुन सुनो,
जगत में जन्म लेने पर, स्तुति-निंदा से क्या डरना?
मन में क्रोध न करके समचित्त रहना चाहिए।

शिवशरणी अक्कमहादेवी

कठिन शब्दार्थ :

माया = भ्रम, अज्ञान; कनक = सोना; कामिनी = स्त्री/सुंदरी; तमंध = अंधकार; पारस = स्पर्श मणि, एक कल्पित पत्थर, जिसका प्रयोग साहित्य में किया जाता है, लोहे से स्पर्श होने पर स्वर्ण में परिवर्तित हो जाता है।; भव = संसार; अनुभाव = शरणों ने इस शब्द का कई अर्थों में प्रयोग किया है :
(१) शिवज्ञानियों और परतत्व-परमात्मा की अनुभूति प्राप्त व्यक्तियों से की जानेवाली चर्चा (२) परमात्मा से साक्षात्कार करना, उसमें एक मेल होना। (३) परमात्मा का ज्ञान, निज तत्व का बोध (४) लिंगांग सामरस्य – शरणसति लिंगपति का मधुर मिलन; हाट = बाजार; समचित्त = वह जिसका मन सब अवस्था में समान रहता हो।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) कनक, कामिनी और माटी को लोगों ने क्या कहा?
२) अल्लमप्रभु देव के आराध्य देव कौन थे?
३) बसवेश्वर के अनुसार ज्ञान से क्या दूर होता है?
४) ज्योति से क्या दूर होता है?
५) बसवेश्वर के आराध्य देव का नाम क्या है?
६) सत्य से क्या दूर होता है?
७) पारस से क्या दूर होता है?
८) पर्वत पर बसा कर घर किससे नहीं डरना चाहिए?

९) हाट में बसा कर घर किससे नहीं डरना चाहिए?
१०) जगत में जन्म लेने के बाद किससे नहीं डरना चाहिए ?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) अल्लमप्रभु देव ने माया के सम्बन्ध में क्या कहा है?
२) बसवेश्वर के विचारों को स्पष्ट कीजिए।
३) अक्कमहादेवी के अनुसार भवसागर में कैसे रहना चाहिए?

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए :

ज्ञान से अज्ञान दूर होता है,
ज्योति से तमंध दूर होता है,
सत्य से असत्य दूर होता है,
पारस से लोहत्व दूर होता है,
आपके शरणों के अनुभाव से
मेरा भव छूट गया, कूडलसंगम देवा।

IV योग्यता विस्तार :

कन्नड़ के अन्य शिवशरणों के वचनों को समझने का प्रयास कीजिए।

* * * * * *

५. रसखान के सवैये

कवि परिचय :

रसखान का जन्म सन् १५५९ में दिल्ली के प्रतिष्ठित पठान परिवार में हुआ था। आप कृष्णभक्त मुस्लिम कवियों में सर्वोपरि माने जाते हैं। गोस्वामी विट्ठलनाथ से दीक्षा लेने के कारण आपको वल्लभ संप्रदाय का अनुयायी माना जाता है। २५२ वैष्णवन् की वार्ता में भी आपका उल्लेख बड़े आदर से किया गया है। आपकी मृत्यु सन् १६२८ में हुई।

आपकी दो प्रमुख रचनाएँ उपलब्ध हैं – 'सुजान-रसखान' और 'प्रेमवाटिका'।

प्रस्तुत प्रथम पद में रसखान हर स्थिति में ब्रज में ही जन्म लेना चाहते हैं। आपने अपना सम्बन्ध उन्हीं से जोड़ने की इच्छा प्रकट की है जिनसे कृष्ण का सम्बन्ध रहा है। दूसरे पद में गोपी अपनी सखी से कहती है कि कृष्ण मेरा प्रिय है और उसे प्राप्त करने के लिए तेरे कहने पर सारा स्वाँग भर लूँगी।

मानुष हों, तो वही रसखानि बसौ ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पसु हौं, तो कहा बसु मेरो, चरौ नित नंद की धेनु मँझारन॥
पाहन हौं, तो वही गिरि कौ, जो धरयौ कर छत्र पुरन्दर धारन।
जो खग हौं, बसेरो करौं मिलि कालिन्दी-कूल-कदम्ब की डारन ॥१॥

मोर-पखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माला गरें पहिरौंगी।
ओढ़ि पितम्बर लै लकुटी बन, गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी॥
भावतो वोहि मेरो 'रसखानि', सो तेरे कहें सब स्वांग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की, अधरान-धरी अधरा न धरौंगी॥२॥

कठिन शब्दार्थ :

मानुष = मनुष्य; मँझारन = मध्य में; पाहन = पत्थर; छत्र = छाता; पुरन्दर = इन्द्र; धारन = गर्व नष्ट करने के लिए; कालिन्दी-कूल-कदम्ब = यमुना के तट स्थित कदम्ब वृक्ष; डारन = डालियों में; मोर-पखा = मोर-मुकुट; पितम्बर = पीला वस्त्र; अधरा = ओंठ।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) रसखान मनुष्य रूप में अगला जन्म कहाँ लेना चाहते हैं?
२) रसखान पशु रूप में जन्म लेने पर कहाँ रहना चाहते हैं?
३) रसखान पक्षी रूप में जन्म लेने पर किस डाली पर बसना चाहते हैं?
४) गोपी सिर पर क्या धारण करना चाहती है?
५) गोपी कृष्ण की मुरली कहाँ नहीं रखना चाहती?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) रसखान ब्रजभूमि में क्यों जन्म लेना चाहते हैं?
२) गोपी क्या-क्या स्वांग भरती है?
३) गोपियों का कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम कैसा है?

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए :

मानुष हों, तो वही रसखानि बसौ ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पसु हौं, तो कहा बसु मेरो, चरौ नित नंद की धेनु मँझारन ॥
पाहन हौं, तो वही गिरि कौ, जो धरयौ कर छत्र पुरन्दर धारन।
जो खग हौं, बसेरो करौं मिलि कालिन्दी-कूल-कदम्ब की डारन ॥

* * * * * *

आ) आधुनिक कविता

१. कुटिया में राजभवन

मैथिलीशरण गुप्त

कवि परिचय :

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के प्रख्यात रचनाकार गुप्त जी का जन्म १८८६ ई. में चिरगाँव, झाँसी (उत्तर प्रदेश) में हुआ। आप मूलत: राष्ट्रीय भावना के पोषक कवि माने जाते हैं। आपने अपनी रचनाओं के माध्यम से जनजागरण का प्रयास किया। अतीत की गरिमा तथा वैभव को प्रेरणा के रूप में ग्रहण करते हुए आपने भारतवासियों को वर्तमान दुरावस्था से उभरने के लिए प्रोत्साहित किया। आपकी मृत्यु १९६४ ई. में हुई।

'साकेत' और 'जय भारत', आपके दो प्रसिद्ध महाकाव्य हैं। 'पंचवटी', 'झँकार', 'यशोधरा', 'द्वापर', 'विष्णु-प्रिया', 'भारत-भारती' आदि अन्य रचनाएँ हैं।

प्रस्तुत पद्यभाग 'साकेत' महाकाव्य से लिया गया है जो आधुनिक रामकाव्य परम्परा की अनुपम कड़ी मानी जाती है। खड़ीबोली को काव्यभाषा बनाने तथा उसकी अभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ाने में गुप्त जी की उल्लेखनीय भूमिका रही है।

सीताजी वन में राज सुख भोगती हैं। श्री रामचंद्रजी स्वयं आपके साथ-साथ रहते हैं और देवर लक्ष्मण मंत्री के रूप में कार्य कर रहे हैं। यहाँ धन और राज वैभव का कोई मूल्य नहीं।

मेरी कुटिया में राजभवन मन भाया
सम्राट स्वयं प्राणेश, सचिव देवर हैं,
देते आ कर अशीष हमें मुनिवर हैं,
धन तुच्छ यहाँ, यद्यपि असंख्य आकर हैं।
पानी पीते मृग, सिंह एक तट पर हैं।

सीता रानी को यहाँ लाभ ही लाया।
मेरी कुटिया में राजभवन मन भाया।
औरों के हाथों यहाँ नहीं पलती हूँ,
अपने पैरों पर खड़ी आप चलती हूँ,
श्रमवारि-बिन्दु फल स्वास्थ्य-शुक्ति फलती हूँ
अपने अंचल से व्यजन आप झलती हूँ।

तनु-लता-सफलता-स्वादु आज ही आया
मेरी कुटिया में राजभवन मन भाया।
किसलय-कर स्वागत हेतु हिला करते हैं
मृदु मनोभाव-सम सुमन खिला करते हैं
डाली-डाली में नव फल नित्य मिला करते हैं
तृण-तृण पर मुक्ता-भार झिला करते हैं।

निधि खोले दिखला रही प्रकृति निज माया,
मेरी कुटिया में राजभवन मन भाया।
कहता है कौन कि भाग्य ठगा है मेरा?
वह सुना हुआ भय दूर भगा है मेरा।
कुछ करने में अब हाथ लगा है मेरा,
वन में ही तो गार्हस्थ्य जगा है मेरा।

वह वधू जानकी बनी आज यह जाया
मेरी कुटिया में राजभवन मन भाया।
फल-फूलों से हैं लदी डालियाँ मेरी,
वे हरी पत्तलें-भरी थालियाँ मेरी,
मुनि बालायें हैं यहाँ आलियाँ मेरी।
तटीनी की लहरें और तालियाँ मेरी।

क्रीडा-सामग्री बनी स्वयं निज छाया।
मेरी कुटिया में राजभवन मन भाया।

कठिन शब्दार्थ :

प्राणेश = पति; सचिव = मंत्री; अशीष = आशीर्वाद; भाया = अच्छा लगा; श्रमवारि बिन्दु = परिश्रम के बल निकला पानी, पसीना; किसलय-कर = कोमल हाथ; मुक्ता = मोती; निधि = खज़ाना; गार्हस्थ्य = गृहस्थ; आलियाँ = सखियाँ।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) सीता जी का मन कहाँ भाया?
२) सीता जी के प्राणेश कौन थे?
३) सीता जी कुटिया को क्या समझती हैं?
४) नवीन फल नित्य कहाँ मिला करते हैं?
५) सीता की गृहस्थी कहाँ जगी ?
६) वधू बनकर कौन आयी है?
७) सीता की सखियाँ कौन हैं?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) सीता जी अपनी कुटिया में कैसे परिश्रम करती थीं?
२) सीता जी प्रकृति-सौंदर्य के बारे में क्या कहती हैं?
३) सीता जी कुटिया में कैसे सुखी हैं?
४) 'कुटिया में राजभवन' कविता का आशय संक्षेप में लिखिए।

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए :

१) औरों के हाथों यहाँ नहीं पलती हूँ,
अपने पैरों पर खड़ी आप चलती हूँ,
श्रमवारि-बिन्दु फल स्वास्थ्य-शुक्ति फलती हूँ
अपने अंचल से व्यजन आप झलती हूँ।

२) कहता है कौन कि भाग्य ठगा है मेरा?
वह सुना हुआ भय दूर भगा है मेरा।
कुछ करने में अब हाथ लगा है मेरा,
वन में ही तो गार्हस्थ्य जगा है मेरा।

* * * * * *

२. तोड़ती पत्थर

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

कवि परिचय :

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी का जन्म १८९६ ई. में मेदिनीपुर, महिषादल नगर में हुआ था। अल्पायु में आपकी माता की मृत्यु हुई। पत्नी तथा पिता के असामयिक निधन, गरीबी एवं तिरस्कार से जूझते हुए 'निराला' का व्यक्तित्व जुझारू तथा संघर्षशील हो गया। आपका निधन १९६१ई. में हुआ।

आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं — 'परिमल', 'गीतिका', 'अनामिका', 'अर्चना', 'आराधना', 'कुकुरमुत्ता', 'राम की शक्तिपूजा', 'तुलसीदास', आदि।

निराला के काव्य में कथ्य और शिल्प की दृष्टि से वैविध्यता दिखाई देती है। आपके काव्य में मानवतावाद, भक्ति, श्रृंगार और प्रकृति से संबंधित भावों का चित्रण हुआ है। 'निराला'जी की भाषा में ओज है, प्रवाह है, कसक है और गरिमा है।

प्रस्तुत कविता में सड़क पर पत्थर तोड़नेवाली एक साधन-हीन और असहाय नारी का अति सजीव चित्र अंकित हुआ है। गर्मियों की तपती दुपहरी में अपने घर से दूर काम करनेवाली उस नारी के प्रति कवि के मन में अपार सहानुभूति है। एक ओर तो धनी वर्ग ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं में विश्राम कर रहा है और दूसरी ओर मध्याह्न के विषम ताप में यह प्रताड़ित युवती परिश्रम-साध्य कार्य में व्यस्त है। अर्थ-वैषम्य की ओर ध्यान आकृष्ट करानेवाली यह प्रगतिवादी रचना निराला के काव्य-संग्रह 'अनामिका' से संकलित की गई है।

वह तोड़ती पत्थर।
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर।

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय कर्म रत मन।

गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार —
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।

चढ़ रही थी धूप
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप।
उठी झुलसाती हुई लू
रुई ज्यों जलती हुई भू
गर्द चिनगी छा गई,
प्राय: हुई दुपहर
वह तोड़ती पत्थर।

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार।
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं।

सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।
एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा —
'मैं तोड़ती पत्थर।'

कठिन शब्दार्थ :

अट्टालिका = अटारी, महल, पक्की इमारत; भवन = महल; झुलसाती हुई लू = अत्यंत गरम हवा; छिन्न = कटा हुआ; सीकर = पसीना; प्रहार = आघात, वार।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) नारी कहाँ पत्थर तोड़ती थी?
२) पत्थर तोड़ती नारी के तन का रंग कैसा था?
३) नारी बार-बार क्या करती थी?
४) नारी कब पत्थर तोड़ रही थी?
५) नारी के माथे से क्या टपक रहा था?
६) 'तोड़ती पत्थर' कविता के कवि कौन हैं?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़नेवाली स्त्री का चित्रण कीजिए।
२) किन परिस्थितियों में नारी पत्थर तोड़ रही थी?
३) 'तोड़ती पत्थर' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए :

१) चढ़ रही थी धूप
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप ।
उठी झुलसाती हुई लू

२) देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार।
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं।

* * * * * *

३. उल्लास

सुभद्राकुमारी चौहान

कवयित्री परिचय :

सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म १९०४ ई. में प्रयाग के वैश्य-क्षत्रिय कुल में हुआ था। आप आधुनिक युग की राष्ट्रीय धारा की कवयित्री हैं। महात्मा गांधी जी के राष्ट्रीय आन्दोलन में आपने सक्रिय रूप से भाग लिया था। आपकी कविताएँ देशभक्ति का सिंहनाद करती चलती हैं। 'झाँसी की रानी' और 'वीरों का कैसा हो वसंत' आपकी बहुचर्चित कविताएँ मानी जाती हैं। आत्मत्याग, आत्मरक्षा, स्वतंत्रता प्राप्ति, आपके काव्य का मुख्य विषय है। १९४८ ई. में मोटर दुर्घटना में आपकी मृत्यु हुई।

आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं – **काव्य :** 'मुकुल', 'त्रिधारा'; **कहानी संग्रह :** 'बिखरे मोती', 'सीधे-साधे चित्र', 'उन्मादिनी'।

प्रस्तुत कविता में कवयित्री जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखती हैं। आपकी भाषा सरल एवं प्रचलित खड़ीबोली है। मानव हृदय में उठनेवाले भावों को आपने अपनी सहज भाषा में अभिव्यक्त किया है। जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने का संदेश इस कविता के माध्यम से प्राप्त होता है। आपकी काव्याभिव्यक्ति शैली अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व रखती है।

शैशव के सुन्दर प्रभात का
मैंने नव विकास देखा।
यौवन की मादक लाली में,
यौवन का हुलास देखा॥

जग-झंझा-झकोर में मैंने,
आशा लतिका का विकास देखा।
आकांक्षा, उत्साह प्रेम का
क्रम-क्रम से प्रकाश देखा॥

जीवन में न निराशा मुझको,
कभी रुलाने को आई।
'जग झूठा है' यह विरक्ति भी,
नहीं सिखाने को आई॥

अरि-दल की पहिचान कराने,
नहीं घृणा आने पाई।
नहीं अशान्ति हृदय तक अपनी,
भीषणता लाने पाई॥

मैंने सदा किया है सबसे,
मधुर प्रेम का ही व्यवहार।
विनिमय में पाया सदैव ही,
कोमल अन्स्ततल का प्यार॥

मैं हूँ प्रेममयी, जग दिखता
मुझे प्रेम का पारावार।
भरा प्रेम से मेरा जीवन,
लुटा रहा है निर्मल प्यार॥

मैं न कभी रोई जीवन में
रोता दिखा न यह संसार।
मृदुल प्रेम के ही गिरते हैं,
आँखों से आँसू दो चार॥

कठिन शब्दार्थ :

शैशव = बचपन; प्रभात = प्रात:काल, सवेरा; मादक = नशीला; हुलास = उल्लास; आकांक्षा = चाह, इच्छा; विरक्ति = वैराग; घृणा = नफरत; भीषणता = भयानक; पारावार = समुद्र; मृदुल = कोमल।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) कवयित्री ने शैशव प्रभात में क्या देखा?
२) कवयित्री ने यौवन के नशे में क्या देखा?
३) कवयित्री ने किसका विकास देखा?
४) कवयित्री ने किसका प्रकाश देखा?
५) कवयित्री को किसने कभी नहीं रूलाया?
६) कवयित्री ने हमेशा किस प्रकार का व्यवहार किया?
७) कवयित्री को प्रेम का क्या दिखाई देता है?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) 'उल्लास' कविता के आधार पर मानव हृदय में उठनेवाले भावों को अपने शब्दों में लिखिए।
२) कवयित्री ने जीवन के सम्बन्ध में क्या कहा है?
३) 'उल्लास' कविता का आशय संक्षेप में लिखिए।

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए :

१) जीवन में न निराशा मुझको,
कभी रुलाने को आई।
'जग झूठा है' यह विरक्ति भी,
नहीं सिखाने को आई॥

२) मैं हूँ प्रेममयी, जग दिखता
मुझे प्रेम का पारावार।
भरा प्रेम से मेरा जीवन,
लुटा रहा है निर्मल प्यार॥

* * * * * *

४. तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए

डॉ. हरिवंशराय 'बच्चन'

कवि परिचय :

हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध गीतकार और हालावाद के प्रवर्तक माने जाने वाले 'बच्चन' जी का जन्म १९०७ ई. में प्रयाग के कटरा मुहल्ले में हुआ था। आपने प्रयाग विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए. और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। कुछ वर्ष आपने भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में हिन्दी भाषा विशेषज्ञ के रूप में काम किया। आप राज्य-सभा सदस्य भी रहे। आपकी मृत्यु २००३ ई. में हुई।

आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं – 'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मधु कलश', 'निशा निमंत्रण', 'प्रणय पत्रिका', 'हलाहल', 'बंगाल का अकाल' आदि।

प्रस्तुत कविता में अपूर्व संगीत है। वह संगीत प्राणों के तार-तार को हिला देता है। मधुर स्वप्न और मादक कल्पनाओं के साथ-साथ मोहक शब्दावली का प्रयोग आपकी निजी विशेषता है। समाज के प्रति मनुष्य का दायित्व एवं विश्व के प्रति उदारवादी दृष्टिकोण कवि की जिम्मेदारी के साथ-साथ पाठकों के प्रति कृतज्ञता का भाव इस कविता का केन्द्रीय विषय है। आपकी कविताओं पर उमर खय्याम की रूबाईयों का प्रभाव दिखाई देता है।

तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए।
मेरे वर्ण-वर्ण विशृंखल,
चरण-चरण भरमाये,
गूंज-गूंजकर मिटनेवाले
मैंने गीत बनाये।

कूक हो गयी हूक गगन की
कोकिल के कंठों पर,
तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए।

जब-जब जग ने कर फैलाये
मैंने कोष लुटाया,
रंक हुआ मैं निज निधि खोकर,
जगती ने क्या पाया?

भेंट न जिसमें कुछ खोऊँ
पर तुम सब कुछ पाओ,
तुम ले लो, मेरा दान अमर हो जाए,
तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए।

सुन्दर और असुन्दर जग में
मैंने क्या न सराहा,
इतनी ममतामय दुनिया में
मैं केवल अनचाहा !

देखूँ अब किसकी रुकती है
आ मुझपर अभिलाषा,
तुम रख लो मेरा मान अमर हो जाए,
तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए।

दु:ख से जीवन बीता फिर भी
शेष अभी कुछ रहता,
जीवन की अंतिम घड़ियों में
भी तुम से यह कहता,

सुख की एक साँस पर होता
है अमरत्व निछावर,
तुम छू दो मेरा प्राण अमर हो जाए !
तुम गा दो, मेरा गान अमर हो जाए !

कठिन शब्दार्थ :

विश्रृंखल = बन्धनहीन, स्वतंत्र, मुक्त; कूक = लम्बी गहरी आवाज़ कोकिला की आवाज; हूक = दर्द की आवाज़, पीडा; कोष = निधि, खज़ाना; रंक = गरीब; निछावर = समर्पित।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) बच्चन जी ने किस प्रकार के गीत बनाए?
२) कवि बच्चन जी ने क्या लुटाया?
३) कवि बच्चन क्या खोकर रंक हुए?
४) दुनिया कैसी है?
५) कवि बच्चन का जीवन कैसे बीता?
६) सुख की एक साँस पर क्या निछावर है?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) बच्चन जी ने जग में क्या लुटाया और क्यों?
२) बच्चन जी पाठकों को क्या-क्या भेंट देते हैं?
३) बच्चन जी ने संसार और जीवन के संबंध में क्या कहा है?
४) बच्चन जी की कविता का मूल भाव लिखिए ।

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए :

१) जब-जब जग ने कर फैलाये
मैंने कोष लुटाया,
रंक हुआ मैं निज निधि खोकर,
जगती ने क्या पाया?

२) दु:ख से जीवन बीता फिर भी
शेष अभी कुछ रहता,
जीवन की अंतिम घड़ियों में
भी तुम से यह कहता।

* * * * * *

५. प्रतिभा का मूल बिन्दु

डॉ. प्रभाकर माचवे

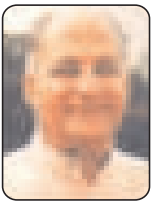

कवि परिचय :

प्रभाकर माचवे जी का जन्म २६ दिसम्बर १९१७ में मध्यप्रदेश के एक मध्य वित्त महाराष्ट्रीयन कुल में हुआ। आप १९३८ ई. में माधव कालेज, उज्जैन में दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक नियुक्त हुए जहाँ १९४८ ई. तक रहे। आपका लेखन बहुत विस्तृत और बहुआयामी है। आपने हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी तीनों भाषाओं में लेखनी चलाई। आप कवि के अलावा, शोधकर्ता, अनुवादक, संपादक, कहानीकार, उपन्यासकार, समीक्षक, निबंधकार भी हैं। 'तार सप्तक' के सात कवियों में माचवे भी एक हैं।

आपकी काव्य रचनाएँ हैं – 'स्वप्नभंग', 'अनुक्षण', 'तेल की पकौड़ियाँ', 'मेपल' आदि।

प्रस्तुत कविता में प्रतिभा के मूल की सैद्धांतिक समीक्षा की गयी है जिसमें आत्यंतिक कल्पनाओं का, अनुमान का प्रयोग न करके कवि जीवन के निरंतर संघर्ष पथ को अपनाता है। प्रतिभा सतत प्रयास एवं परिश्रम की जननी मानी जाती है।

''कहाँ जन्म है तेरा?'' मैंने पूछा जब प्रतिभा से,
''महलों में? गुलगुले गलीचों पर? गुलाब की क्यारी में?
वृद्धों की चिंता में? बच्चों की दंतहीन किलकारी में?
बोलो, तुम रहती कहाँ? जानने को हम सब हैं कितने प्यासे!''

कवि बोला — ''वह तो दिवास्वप्न की रानी है,''
शिल्पी ने मिट्टी के लौंदे की ओर सहज संकेत किया;
ओ' चित्रकार ने फलक, वर्ण, तूली को सहज समेट लिया,
गायिका कह गई — ''क्या तूने दिव्य-स्वर की मदिरा पी है?''

क्या निरी कल्पना प्रतिभा है, क्या निरी सूझ की तितिल-परी?
क्या प्रतिभा केवल नवनवीन विस्मय — उपजाऊ ऊहा है?
प्रतिभा क्या है सन्ध्या-भाषा? सिद्धों का पाहुड़-दूहा है?
प्रतिभा अनुभूति-रसायन है? गहरे 'जीवन' की चल-शफरी?

प्रतिभा बोली — ''यातना, निरन्तर कष्ट-सहन की ताकत में
मैं बसती हूँ संघर्ष-निरत साधक में, असिधारा-व्रत में।''

कठिन शब्दार्थ :
दिवास्वप्न = मनोराज्य, आत्यंतिक कल्पना; ऊहा = अनुमान, तर्क-युक्ति; संध्या-भाषा = तांत्रिकों, बौध्दों और सिद्धों के द्वारा प्रयुक्त प्रतीकात्मक भाषा-शैली जिसमें अलौकिक रहस्य और गूढ़ अभिप्राय की मंत्र रूप में अभिव्यक्ति की जाती थी।; जीवन = पानी, जिन्दगी; चल-शफरी = चंचल मछली; असिधारा-व्रत = तलवार की धार पर खड़े होने जैसा कठिन व्रत (कर्म या प्रतिज्ञा)।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :
१) कवि प्रतिभा से क्या पूछते हैं?
२) कवि ने दिवास्वप्न की रानी किसे कहा है?
३) शिल्पी ने किसकी ओर संकेत किया है?
४) गायिका क्या कह गयी?
५) प्रतिभा कहाँ बसती है?
६) 'प्रतिभा का मूल बिन्दु' कविता के कवि का नाम लिखिए।

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :
१) कवि प्रतिभा का मूल कहाँ-कहाँ ढूँढ़ते हैं?
२) कवि माचवे जी के अनुसार प्रतिभा के लक्षण लिखिए।
३) 'प्रतिभा का मूल बिन्दु' कविता का भाव संक्षेप में लिखिए।

* * * * * *

६. तुम आओ मन के मुग्ध मीत

डॉ. सरगु कृष्णमूर्ति

कवि परिचय :

सरल जीवन के परिचायक सरगु कृष्णमूर्ति जी का जन्म कर्नाटक राज्य के बल्लारी नगर में स्थित कौल बाजार में १९३६ ई. में हुआ। आप कन्नड़, तेलगु, हिन्दी तथा अंग्रेजी में समान अधिकार से लिखने की दक्षता रखते थे। आप बेंगलूर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में आचार्य तथा विभागाध्यक्ष रहे। आपकी कई पुस्तकों पर कर्नाटक सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार तथा भारत सरकार से पुरस्कार मिला। आपका निधन २८ अक्टूबर २०१२ को बेंगलूरू में हुआ।

आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं – 'मधु स्वप्न', 'ज्वाला केतन' (काव्य संकलन), 'श्री कृष्ण-गांधी चरित' (प्रबन्ध काव्य), 'तुलसी रामायण और पंप रामायण' (शोध प्रबंध) आदि।

प्रस्तुत कविता में कवि के अनुसार अपने मधुर मीत के आने से मन की मधुर प्रीति फिर से मुस्कुरायेगी और पाप भी पुण्य हो जायेगा।

आत्मा के सहचर किरण मित्र जीवन मरण के साथी हैं। विरह का पुरस्कार मिलन है। इस कविता में मुग्ध मित्र से बिछुड़कर तड़पती हुई व्याकुल आत्मा की दहकती हुई चाह है, गूँजती हुई आह है और कसकती हुई कराह है। इसमें छायावाद, रहस्यवाद एवं प्रतीकवाद का त्रिवेणी संगम है।

मैं तमस्तों में भीत-भीत-झट आओ मेरे किरणमीत।
जिससे कि टिमटिमाता चिराग-फिर जले सूर्य चंद्रमा रीत।

तुम आओ मन के मधुर मीत-मुसकाये मेरी मधुर प्रीत
जिससे कि दोपहर बने प्रात-चिर पाप बने प्रांजल पुनीत।

जन्मों के जीवन मृत्यु मीत! मेरी हारों की मधुर जीत!
झुक रहा तुम्हारे स्वागत में मन का मन शिर का शिर विनीत।

तुम आओ मम कल्याण राग झन झना उठे मेरा अतीत
किल किला उठे कंटक परीत-अंगार हृदय मंदार गीत।

कितने दिन कितनी संध्याएँ कितने युग यों ही गए बीत
मैं जोह पथ वर्षा कामी-तरु-सा हूँ कब से शीत भीत।

झन झनन झनन झंझा झकोर-से झंकृत यह जीवन निशीथ
सब क्षणिक, वणिक वत् स्वार्थ मग्न तुम एक मात्र निस्वार्थ मीत।

दुख दैन्य अश्रु दारिद्र्य धार-कर गए मुझे ही मनो-नीत
तूफान और इस आँधी में सुनवाने रज का जीव गीत।

टेरता रहा तुमको कब से मैं क्रीत क्रीत और प्रीत प्रीत
तेज गगन धरा पर धरी चरण हे हे अभीत ऐ ऐ सुभीत।

तुम नहीं सोच सकते कंपित-गुंफित है कितनी करुण प्रीत।
हे निराकार साकार सगुन-निर्गुण स्वरूप हे गुण परीत।

तुम देवलोक आनंद गीत-आशा अखण्ड शोभा परीत
मैं स्नेह विकल झंकृत प्रगीत-तुम आओ मन के मुग्ध मीत॥

कठिन शब्दार्थ :

तमस्तों = अंधकार; मीत = मित्र; प्रांजल = सरल, सच्चा, सीधा; अतीत = गत, बीता हुआ; कंटक = विघ्न; परीत =परे; मंदार = आक, स्वर्ग का एक देव वृक्ष; निशीथ = अर्ध रात्रि; वणिका = बनिया, व्यापारी; टेरना = पुकारना; क्रीत = खरीदा हुआ; प्रगीत = गीत।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) कवि अपने मित्र से क्या कहता है?
२) कवि अपने मित्र का स्वागत कैसे करता है?
३) कवि किससे बिछुड़कर रह गया है?
४) 'तुम आओ मन के मुग्ध मीत' कविता के कवि कौन हैं?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) अपने मुग्ध मित्र से बिछुड़कर कवि की आत्मा कैसे तड़प रही है?
२) कवि अपने मित्र को किन-किन शब्दों में पुकारता है?
३) कवि अपने मित्र की जुदाई से कैसे व्याकुल हो रहा है?
४) कवि की दु:खी आत्मा का परिचय दीजिए।

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए :

झन झनन झनन झंझा झकोर-से झंकृत यह जीवन निशीथ
सब क्षणिक, वणिक वत् स्वार्थ मग्न तुम एक मात्र निस्वार्थ मीत।

दुख दैन्य अश्रु दारिद्र्य धार-कर गए मुझे ही मनो-नीत
तूफान और इस आँधी में सुनवाने रज का जीव गीत।

* * * * * *

७. मत घबराना

डॉ. रामनिवास 'मानव'

कवि परिचय :

बहुमुखी प्रतिभा के धनी रामनिवास 'मानव' जी का जन्म २ जुलाई १९५४ ई. को तिगरा जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) में हुआ। आपकी शिक्षा एम.ए. (हिन्दी), पीएच.डी. एवं डी.लिट्. तक हुई है। आपको स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं को पढ़ाने का तीन दशक से अधिक अनुभव है। आपको अनेक प्रतिष्ठित सम्मान, पुरस्कार तथा मानद उपाधियों से सम्मानित किया गया है।

आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं — 'धारा-पथ', 'रश्मी-रथ', 'साँझी है रोशनी', 'बोलो मेरे राम', 'सहमी सहमी आग', 'हम सब हिन्दुस्तानी' आदि।

प्रस्तुत कविता में कवि नवयुवकों को यह संदेश देते हैं कि जीवन के पथ पर सदा आगे बढ़ते रहना चाहिए। साथ कोई हो न हो, प्रकृति माता सदा हमारे साथ रहती है। यहाँ प्रकृति को प्रेरणा के रूप में चित्रित किया गया है।

बाधाओं से मत घबराना।
कदम साधकर बढ़ते जाना।

कोई साथ न रहने पर भी
चन्दा-तारे साथ रहेंगे।
दर्द तुम्हारा बाँटेंगे वे,
तुमसे अपनी बात कहेंगे।
सच्चा साथी जान उन्हें तुम
अपनी सारी व्यथा सुनाना।

वीराने में नदियाँ-निर्झर,
जैसे हरदम हँसते–गाते।
आप अकेले अपने साथी,
सदा अकेले बढ़ते जाते।
सच्चा साथी जान उन्हें तुम
जीवन–पथ पर कदम बढ़ाना।

पथ क्या वह बाधाएँ जिसमें
बार–बार टकराती ना हों।
और तितलियाँ रोक रास्ता
राही को ललचाती ना हों।
पर तुम डरकर या ललचाकर
बीच राह में मत रुक जाना।

मंजिल सदा उसी को मिलती
धीर–वीर जो बढ़ता जाता।
काँटों को भी फूल समझता,
विपदाओं से हाथ मिलाता।
कायर तो घबराते वे ही,
वीर न करते कभी बहाना।

कठिन शब्दार्थ :
बाधाएँ= रुकावट, विघ्न; व्यथा = दर्द, दु:ख; ललचाना = लोभग्रस्त होना; विपदा = विपत्ति; कायर = डरपोक, बुज़दिल।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) कवि किस प्रकार आगे बढ़ने के लिए कहते हैं?
२) कवि किसके साथ होने की बात कहते हैं?
३) कवि किसे अपनी व्यथा सुनाने के लिए कहते हैं?

४) पथ पर बार-बार क्या टकराती है?
५) कवि बीच राह में कैसे न रुकने को कहते हैं?
६) वीर काँटों को क्या समझता है?
७) वीर किससे हाथ मिलाता है?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) 'मत घबराना' कविता में प्रकृति को प्रेरणास्त्रोत क्यों कहा गया है?
२) कवि ने जीवन की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?
३) मंजिल किन्हें मिलती है? अपने शब्दों में लिखिए।
४) 'मत घबराना' कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए।

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए :

मंजिल सदा उसी को मिलती
धीर–वीर जो बढ़ता जाता।
काँटों को भी फूल समझता,
विपदाओं से हाथ मिलाता।
कायर तो घबराते वे ही,
वीर न करते कभी बहाना।

* * * * * *

८. अभिनंदनीय नारी

डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल

कवि परिचय :

हिन्दी साहित्य के आधुनिक कवि जयन्ती प्रसाद नौटियाल का जन्म उत्तरांचल राज्य के देहरादून में ३ मार्च १९५६ को हुआ। आपने एम.ए. (हिन्दी तथा अंग्रेजी), एलएल.बी., एम.बी.ए., पीएच.डी. (भाषा-विज्ञान) तथा डी.लिट्.की उपाधियाँ प्राप्त की हैं। डॉ.नौटियाल मूलत: तकनीकी साहित्य के लेखक हैं। आपके लेख विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। आप संप्रति भारत सरकार के अग्रणी बैंक कार्पोरेशन बैंक में सहायक महाप्रबंधक पद पर कार्यरत हैं।

प्रस्तुत कविता को 'यथार्थ' काव्य-संग्रह से लिया गया है। इसमें भारतीय नारी की सहनशीलता, कोमलता, शक्ति और सेवा-भाव को चित्रित किया गया है।

इस धरा पर मृदुल रस धार-सी तुम सुख का सार हो नारी
तुम वंदनीय हो, अभिनंदनीय हो, सादर नमन तुम्हें हे नारी... !
धरा सी सहनशील, जल-सी निर्मल, फूलों सी कोमल तुम नारी
जीवन की गति, जीवन की रति, जीवन की मति हो तुम नारी... !

बचपन में चहक, चिरैय्या सी तुम इठलाती
माता-पिता के मन में आनंद हिलोर उठाती।
चलती ठुमक-ठुमक, बजती पैजनियाँ प्यारी
बाबुल के अंगना में तुलसी बिरवा सी न्यारी ॥

शिशु के साथ शिशु बन जाती और प्रिय के संग बनी प्रिया
क्षमा, करुणा तुम में, स्नेह और सेवा से धन्य धरा को किया
किन्तु स्वार्थी जग ने कब किसी के उपकारों को याद किया?
हे नारी! तेरी करुणा, ममता, ऋजुता का क्या प्रतिदान तुम्हें दिया?

नारी अबला नहीं बल्कि यह नारी रणचंडी भी है,
कृत्या है यह दुर्दम, दैत्य नाशिनी दुर्गा माँ भी है।
शक्ति और शिवानी है यह और कात्यायिनी भी है
दैत्यों के शोणित को पीने वाली महाकाली भी है ॥

विविध रूपों से सजी यह नारी सृष्टि का श्रृंगार है।
नारी ही न हो तो फिर किस काम का यह संसार है।
जिस घर में इसका सम्मान है वह आनंद का आगार है।
अगर जीवन में नारी न हो, तो मानव जीवन ही बेकार है ॥

कठिन शब्दार्थ :

धरा = पृथ्वी; मृदुल = कोमल; सार = मूल, आधार, सारांश; वंदनीय = वंदना योग्य; नमन = प्रणाम; रति = प्रेम; मति = बुद्धि; चिरैय्या = चिड़िया; हिलोर = तरंग; पैजनियाँ = पायल; अंगना = आंगन; बिरवा = पौधा; ऋजुता = सीधापन; प्रतिदान = बदले में देना; अबला = बलहीन; कृत्या = विनाशकारी; दुर्दम = जिसे आसानी से दमन न किया जा सके; कात्यायिनी = पार्वती का एक नाम; शोणित = खून; आगार = घर।

I एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) नारी किसके समान सहनशील होती है?
२) नारी बचपन में किसके मन में हिलोरें उठाती है?
३) नारी ने इस धरती को धन्य कैसे किया?
४) स्वार्थी संसार क्या याद नहीं रखता है?
५) नारी अबला नहीं बल्कि क्या है?
६) जिस घर में नारी का सम्मान हो, वहाँ क्या होता है?

II निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) नारी के विभिन्न गुणों का परिचय दीजिए।
२) नारी के बचपन का चित्रण कीजिए।

३) नारी के शक्ति रूपों का वर्णन कीजिए।
४) नारी किस प्रकार से सृष्टि का श्रृंगार है?

III ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए :

१) इस धरा पर मृदुल रस धार-सी तुम सुख का सार हो नारी
तुम वंदनीय हो, अभिनंदनीय हो, सादर नमन तुम्हें हे नारी....!
धरा सी सहनशील, जल-सी निर्मल, फूलों सी कोमल तुम नारी
जीवन की गति, जीवन की रति, जीवन की मति हो तुम नारी... !

२) नारी अबला नहीं बल्कि यह नारी रणचंडी भी है,
कृत्या है यह दुर्दम, दैत्य नाशिनी दुर्गा माँ भी है।
शक्ति और शिवानी है यह और कात्यायिनी भी है
दैत्यों के शोणित को पीने वाली महाकाली भी है ।।

* * * * * *

तृतीय सोपान

अपठित भाग

कहानियाँ

१. मधुआ

– जयशंकर प्रसाद

लेखक परिचय :

युग प्रवर्तक साहित्यकार जयशंकर प्रसाद का जन्म १८८९ ई. में सुंघनी साहू नाम से सुविख्यात काशी के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। बारह वर्ष की आयु में आपके पिता की मृत्यु के उपरांत, बड़े भाई ने घर पर ही पढ़ने की व्यवस्था कर दी। आपने घर पर ही हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, बंगाली, फारसी आदि भाषाओं का अध्ययन किया। आप पैतृक व्यवसाय और घर की संपूर्ण जिम्मेदारी संभालते हुए साहित्य सृजन में संलग्न रहे। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। साहित्य की प्रत्येक विधा में आपने अपनी लेखनी का जौहर दिखाया। १९३७ ई. में केवल ४८ वर्ष की आयु में आपकी मृत्यु हुई।

आपके **कहानी संग्रह** – 'छाया', 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप', 'आँधी', और 'इंद्रजाल'; **उपन्यास** – 'कंकाल', 'तितली' तथा 'इरावती' (अपूर्ण); **नाटक** – 'राज्यश्री', 'अजातशत्रु', 'स्कंदगुप्त', 'चंद्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी' आदि। 'कामायनी' आपका सुप्रसिद्ध महाकाव्य है। 'आँसू', 'लहर', 'झरना' आदि आपकी महत्वपूर्ण काव्य कृतियाँ हैं।

प्रस्तुत कहानी एक सामाजिक कहानी है। यह परत दर परत खुलती जाती है। शराबी व्यक्ति के जीवन में बालक मधुआ महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। उसके आगमन से शराबी का जीवन सही मायने में रूपायित होता है। वह हर पल बालक मधुआ के बारे में ही सोचने लगता है। बालक के प्रेम में वह अपने जीवन को सार्थक बना लेता है।

बाल मनोदशा से विद्यार्थियों को परिचित कराना तथा बुराई पर अच्छाई की जीत को दर्शाने के उद्देश्य से प्रस्तुत कहानी चयनित है।

आज सात दिन हो गये, पीने को कौन कहे – छुआ तक नहीं! आज सातवाँ दिन है सरकार!

तुम झूठे हो। अभी तो तुम्हारे कपड़े से महँक आ रही है।

वह... वह तो कई दिन हुए। सात दिन से ऊपर-कई दिन हुए-अँधेरे में बोतल उँड़ेलने लगा था। कपड़े पर गिर जाने से नशा भी न आया। और आपको कहने का... क्या कहूँ... सच मानिए। सात दिन – ठीक सात दिन से एक बूँद भी नहीं।

ठाकुर सरदार सिंह हँसने लगे। लखनऊ में लड़का पढ़ता था। ठाकुर साहब भी कभी-कभी वहीं आ जाते। उनको कहानी सुनने का चसका था। खोजने पर यही शराबी मिला। वह रात को, दोपहर में, कभी-कभी सबेरे भी आ जाता। अपनी लच्छेदार कहानी सुनाकर ठाकुर का मनो-विनोद करता।

ठाकुर ने हँसते हुए कहा – ''तो आज पियोगे न?''

''झूठ कैसे कहूँ। आज तो जितना मिलेगा, सब पिऊँगा। सात दिन चने-चबेने पर बिताये हैं, किसलिए।''

''अद्‌भुत! सात दिन पेट काटकर आज अच्छा भोजन न करके तुम्हें पीने की सूझी है! यह भी...।''

''सरकार! मौज-बहार की एक घड़ी, एक लम्बे दुःखपूर्ण जीवन से अच्छी है। उसकी खुमारी में रखे दिन काट लिये जा सकते हैं।''

''अच्छा, आज दिन भर तुमने क्या-क्या किया है?''

''मैंने? अच्छा सुनिये – सबेरे कुहरा पड़ता था, मेरे धुँआ से कम्बल-सा वह भी सूर्य के चारों ओर लिपटा था। हम दोनों मुँह छिपाये पड़े थे।''

ठाकुर साहब ने हँसकर कहा – ''अच्छा तो इस मुँह छिपाने का कोई कारण?''

''सात दिन से एक बूँद भी गले न उतरी थी। भला मैं कैसे मुँह दिखा सकता था! और जब बारह बजे धूप निकली, तो फिर लाचारी थी! उठा, हाथ-मुँह धोने में जो दुःख हुआ, सरकार, वह क्या कहने की बात है! पास में पैसे बचे थे। चना चबाने से दाँत भाग रहे थे। कट-कटी लग रही थी। पराठे वाले के यहाँ पहुँचा, धीरे-धीरे खाता रहा और अपने को

सेंकता भी रहा। फिर गोमती किनारे चला गया। घूमते-घूमते अँधेरा हो गया, बूँदे पड़ने लगीं, तब कहीं भाग के आपके पास आ गया।''

''अच्छा, जो उस दिन तुमने गड़रिये वाली कहानी सुनाई थी, जिसमें आसफुद्दौला ने उसकी लड़की का आँचल भुने हुए भुट्टे के दाने के बदले मोतियों से भर दिया था ! वह क्या सच है?''

''सच! अरे, वह गरीब लड़की भूख से उसे चबा कर थू-थू करने लगी।... रोने लगी ! ऐसी निर्दयी दिल्लगी बड़े लोग कर ही बैठते हैं। सुना है श्री रामचन्द्र ने भी हनुमान जी से ऐसा ही...।''

ठाकुर साहब ठठाकर हँसने लगे। पेट पकड़कर हँसते-हँसते लोट गये। साँस बटोरते हुए सम्हल कर बोले – ''और बड़प्पन कहते किसे हैं? कंगाल तो कंगाल! गधी लड़की! भला उसने कभी मोती देखे थे, चबाने लगी होगी। मैं सच कहता हूँ, आज तक तुमने जितनी कहानियाँ सुनाई, सबमें बड़ी टीस थी। शाहजादों के दुखड़े, रंग-महल की अभागिनी बेगमों के निष्फल प्रेम, करूण कथा और पीड़ा से भरी हुई कहानियाँ ही तुम्हें आती हैं; पर ऐसी हँसाने वाली कहानी और सुनाओ, तो मैं अपने सामने ही बढ़िया शराब पिला सकता हूँ।''

''सरकार! बूढों से सुने हुए वे नवाबी के सोने-से दिन, अमीरों की रंग-रेलियाँ, दुखियों की दर्द-भरी आहें, रंगमहलों में घुट-घुटकर मरनेवाली बेगमें, अपने-आप सिर में चक्कर काटती रहती हैं। मैं उनकी पीड़ा से रोने लगता हूँ। अमीर कंगाल हो जाते हैं। बड़े-बड़ों के घमंड चूर होकर धूल में मिल जाते हैं। तब भी दुनिया बड़ी पागल है। मैं उसके पागलपन को भुलाने के लिए शराब पीने लगता हूँ – सरकार! नहीं तो यह बुरी बला कौन अपने गले लगाता !''

ठाकुर साहब ऊँघने लगे थे। अँगीठी में कोयला दहक रहा था। शराबी सरदी से ठिठुरा जा रहा था। वह हाथ सेंकने लगा। सहसा नींद में चौंककर ठाकुर साहब ने कहा – ''अच्छा जाओ, मुझे नींद लग रही है। वह देखो, एक रुपया पड़ा है, उठा लो लल्लू को भेजते जाओ।''

शराबी रुपया उठाकर धीरे से खिसका। लल्लू था ठाकुर साहब का जमादार। उसे खोजते हुए जब वह फाटक पर की बगल वाली कोठरी के पास पहुँचा तो उसे सुकुमार कंठ से सिसकने का शब्द सुनाई पड़ा। वह खड़ा होकर सुनने लगा।

''तो सूअर, रोता क्यों है? कुँवर साहब ने दो ही लातें लगाई हैं! कुछ गोली तो नहीं मार दी?'' कर्कश स्वर से लल्लू बोल रहा था; किन्तु उत्तर में सिसकियों के साथ एकाध हिचकी ही सुनाई पड़ जाती थी। अब और भी कठोरता से लल्लू ने कहा, ''मधुआ! जा सो रह, नखरा न कर, नहीं तो उठूँगा तो खाल उधेड़ दूँगा। समझा न?''

शराबी चुपचाप सुन रहा था। बालक की सिसकी बढ़ने लगी। फिर उसे सुनाई पड़ा – ''ले अब भागता है कि नहीं? क्यों मार खाने पर तुला है?''

भयभीत बालक बाहर चला आ रहा था। शराबी ने उसके छोटे से सुन्दर गोरे मुँह को देखा। आँसू की बूँदें ढुलक रही थीं। बड़े दुलार से उसका मुँह पोंछते हुए उसे लेकर वह फाटक के बाहर चला आया। दस बज रहे थे। कड़ाके की सर्दी थी। दोनों चुपचाप चलने लगे। शराबी की मौन सहानुभूति को उस छोटे-से सरल हृदय ने स्वीकार कर लिया। वह चुप हो गया। अभी वह एक तंग गली पर रुका ही था कि बालक के फिर से सिसकने की उसे आहट लगी। वह झिड़ककर बोल उठा –

''अब क्या रोता है रे छोकरे?''

''मैंने दिन भर से कुछ खाया नहीं।''

''कुछ खाया नहीं; इतने बड़े अमीर के यहाँ रहता है और दिन भर तुझे खाने को नहीं मिला?''

''यही कहने तो मैं गया था जमादार के पास; मार तो रोज ही खाता हूँ। आज तो खाना ही नहीं मिला। कुँवर साहब का ओवरकोट लिये खेल में दिन भर साथ रहा। सात बजे लौटा, तो और भी नौ बजे तक कुछ काम करना पड़ा। आटा रख नहीं सका था रोटी बनती तो कैसे! जमादार से कहने गया था!'' भूख की बात कहते-कहते बालक के ऊपर उसकी दीनता और भूख ने एक साथ ही जैसे आक्रमण कर दिया, वह फिर हिचकियाँ लेने लगा।

शराबी उसका हाथ पकड़कर घसीटता हुआ गली में ले चला। एक गन्दी कोठरी का दरवाजा ढकेलकर बालक को लिये हुए वह भीतर पहुँचा। टटोलते हुए सलाई से मिट्टी की ढिबरी जलाकर वह फटे कंबल के नीचे से कुछ खोजने लगा। एक पराठे का टुकड़ा मिला! शराबी उसे बालक के हाथ में देकर बोला – ''तब तक तू इसे चबा, मैं तेरा गढ़ा भरने

के लिए कुछ और ले आऊँ—सुनता है रे छोकरे! रोना मत, रोएगा तो खूब पीटूँगा। मुझसे रोने से बड़ा बैर है। पाजी कहीं का, मुझे भी रुलाने का...।''

शराबी गली के बाहर भागा। उसके हाथ में एक रुपया था। बारह आने का एक देशी अद्धा और दो आने की चाय... दो आने की पकौड़ी.... नहीं-नहीं आलू-मटर... अच्छा, न सही चारों आने का माँस ही ले लूँगा। पर यह छोकरा! इसका गढ़ा जो भरना होगा। यह कितना खायेगा और क्या खायेगा? ओह! आज तक तो कभी मैंने दूसरों के खाने का सोच-विचार किया ही नहीं। तो क्या ले चलूँ? — पहले एक अद्धा ही ले लूँ! इतना सोचते-सोचते उसकी आँखों पर बिजली के प्रकाश की झलक पड़ी। उसने अपने को मिठाई की दूकान पर खड़ा पाया। वह शराब का अद्धा लेना भूल कर मिठाई-पूरी खरीदने लगा। नमकीन लेना भी न भूला। पूरा एक रुपये का सामान लेकर वह दूकान से हटा। जल्द पहुँचने के लिए एक तरह से दौड़ने लगा। अपनी कोठरी में पहुँचकर उसने दौनों की पाँत बालक के सामने सजा दी। उनकी सुगन्ध से बालक के गले में एक तरावट पहुँची। वह मुस्कराने लगा।

शराबी ने मिट्टी की गगरी से पानी उँड़ेलते हुए कहा — ''नटखट कहीं का, हँसता है, सोंधी बास नाक में पहुँची न? ले खूब ठूँसकर खा ले, और फिर रोया कि पीटा!''

दोनों ने, बहुत दिन पर मिलने वाले दो मित्रों की तरह साथ बैठकर भरपेट खाया। सीली जगह में सोते हुए बालक ने शराबी का पुराना बड़ा कोट ओढ़ लिया था। जब उसे नींद आ गई, तो शराबी भी कम्बल तानकर बड़बड़ाने लगा। सोचा था, आज सात दिन पर भरपेट पीकर सोऊँगा, लेकिन यह छोटा-सा रोना पाजी, न जाने कहाँ से आ धमका?

एक चिन्तापूर्ण आलोक में आज पहले पहल शराबी ने आँख खोल कर कोठरी में बिखरी हुई दारिद्र्य की विभूति को देखा, और देखा उस घुटनों से ठुड्डी लगाये हुए निरीह बालक को। उसने तिलमिलाकर मन- ही-मन प्रश्न किया — किसने ऐसे सुकुमार फूल को कष्ट देने के लिए निर्दयता की सृष्टि की? आह री नियति! तब इसको लेकर मुझे घर-बारी बनना पड़ेगा क्या? दुर्भाग्य! जिसे मैंने कभी सोचा भी न था। मेरी इतनी माया-ममता — जिस पर आज तक केवल बोतल का ही पूरा अधिकार था

– इसका पक्ष क्यों लेने लगी? इस छोटे-से पाजी ने मेरे जीवन के लिए कौन-सा इन्द्रजाल रचने का बीड़ा उठाया है ? तब क्या करूँ? कोई काम करूँ? कैसे दोनों का पेट चलेगा? नहीं, भगा दूँगा इसे – आँख तो खोले!

बालक अँगड़ाई ले रहा था। वह उठ बैठा। शराबी ने कहा – ''ले उठ, कुछ खा ले, अभी रात का बचा हुआ है; और अपनी राह देख! तेरा नाम क्या है रे?''

बालक ने सहज हँसी हँसकर कहा – ''मधुआ! भला हाथ-मुँह भी न धोऊँ। खाने लगूँ! और जाऊँगा कहाँ?''

''आह!'' कहाँ बताऊँ इसे कि चला जाय! कह दूँ कि भाड़ में जा; किन्तु वह आज तक दु:ख की भट्टी में जलता ही रहा है। तो... वह चुपचाप घर से झल्लाकर सोचता हुआ निकला – ले पाजी, अब यहाँ लौटूँगा ही नहीं। तू ही इस कोठरी में रह! शराबी घर से निकला। गोमती किनारे पहुँचने पर उसे स्मरण हुआ कि वह कितनी ही बातें सोचता आ रहा था, पर कुछ भी सोच न सका। हाथ-मुँह धोने लगा। उजली धूप निकल आई थी। वह चुपचाप गोमती की धारा को देख रहा था। धूप की गरमी से सुखी होकर वह चिन्ता भुलाने का प्रयत्न कर रहा था कि किसी ने पुकारा –

''भले आदमी, रहे कहाँ? सालों पर दिखाई पड़े। तुमको खोजते-खोजते मैं थक गया।''

शराबी ने चौंककर देखा – वह कोई जान-पहचान का तो मालूम होता था; पर कौन है, यह ठीक-ठीक न जान सका।

उसने फिर कहा – ''तुम्हीं से कह रहे हैं। सुनते हो, उठा ले जाओ अपनी सान धरने की कल, नहीं तो सड़क पर फेंक दूँगा। एक ही तो कोठरी, जिसका मैं दो रुपये किराया देता हूँ – उसमें क्या मुझे अपना कुछ रखने के लिए नहीं है?''

''ओहो! रामजी, तुम हो भाई, मैं भूल गया था। तो चलो, आज ही उसे उठा लाता हूँ।'' कहते हुए शराबी ने सोचा – 'अच्छी रही, उसी को बेचकर कुछ दिनों तक काम चलेगा।'

गोमती नहाकर, रामजी पास ही अपने घर पहुँचा। शराबी की कल देते हुए उसने कहा – ''ले जाओ, किसी तरह मेरा इससे पिण्ड छूटे।''

बहुत दिनों पर आज उसको कल ढोना पड़ा। किसी तरह अपनी कोठरी में पहुँचकर उसने देखा कि बालक चुपचाप बैठा है। बड़बड़ाते हुए उसने पूछा – ''क्यों रे, तूने कुछ खा लिया कि नहीं?''

''भरपेट खा चुका हूँ और वह देखो, तुम्हारे लिए भी रख दिया है।'' कहकर उसने अपनी स्वाभाविक मधुर हँसी से उस रूखी कोठरी को तर कर दिया।

शराबी एक क्षण भर चुप रहा। फिर चुपचाप जल-पान करने लगा। मन-ही-मन सोच रहा था – यह भाग्य का संकेत नहीं तो और क्या है? चलूँ फिर सान देने का काम चलता करूँ। दोनों का पेट भरेगा। वही पुराना चरखा फिर सिर पड़ा। नहीं तो, दो बातें, किस्सा-कहानी, इधर-उधर की कहकर अपना काम चला ही लेता था। पर अब तो बिना कुछ किये घर नहीं चलने का। जल पीकर बोला – ''क्यों रे मधुआ, अब तू कहाँ जायेगा?''

''कहीं नहीं।''

''यह लो, तो फिर क्या यहाँ जमा गड़ी है कि मैं खोद-खोदकर तुझे मिठाई खिलाता रहूँगा।''

''तब कोई काम करना चाहिए।''

''करेगा?''

''जो कहो?''

''अच्छा तो आज से मेरे साथ-साथ घूमना पड़ेगा यह कल तेरे लिए लाया हूँ! चल, आज से तुझे सान देना सिखाऊँगा। कहाँ, इसका कुछ ठीक नहीं। पेड़ के नीचे रात बिता सकेगा न?''

''कहीं भी रह सकूँगा; पर उस ठाकुर की नौकरी न कर सकूँगा?''

शराबी ने एक बार स्थिर दृष्टि से उसे देखा। बालक की आँखें दृढ़ निश्चय की सौगन्ध खा रही थीं।

शराबी ने मन-ही-मन कहा – ''बैठे-बैठाये यह हत्या कहाँ से लगी? अब तो शराब न पीने की मुझे भी सौगन्ध लेनी पड़ी।''

वह साथ ले जानेवाली वस्तुओं को बटोरने लगा। एक गट्ठर का और दूसरा कल का, दो बोझ हुए।

शराबी ने पूछा – ''तू किसे उठाएगा?''

''जिसे कहो।''

''अच्छा, तेरा बाप जो मुझको पकड़े तो?''

''कोई नहीं पकड़ेगा, चलो भी। मेरे बाप कभी के मर गये।''

शराबी आश्चर्य से उसका मुँह देखता हुआ कल उठाकर खड़ा हो गया। बालक ने गठरी लादी। दोनों कोठरी छोड़कर चल पड़े।

कठिन शब्दार्थ :

महक = सुगन्ध; लच्छेदार = मजेदार; खुमारी = नशा; कुहरा = ओस, शबनम; लाचार = विवश, मजबूर; टीस = रह-रहकर उठनेवाला दर्द; ऊँघना = झपकी लेना; दहक = धधकना; सिसकना = धीरे-धीरे रोना; उधेड़ना = खाल खींचना; ढुलकना = लुढ़कना; दुलार = लाड़-प्यार; सौगन्ध खाना = प्रण लेना; ढिबरी = मिट्टी के तेल का दीपक; पाजी = शरारती; अद्धा = आधा; सीली = गीली जगह; आलोक = प्रकाश; सान = एक पत्थर जिस पर रगड़कर अस्त्रों की धार तेज की जाती है; पिण्ड छूटना = पीछा छुड़ाना; गड़रिया = भेड़-बकरी पालने वाला।

I) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

१) बालक का नाम क्या है?
२) ठाकुर सरदार सिंह का लड़का कहाँ पढ़ता था?
३) बड़े-बड़ों के घमंड चूर होकर कहाँ मिल जाते हैं?
४) गन्दी कोठरी में बालक को खाने के लिए क्या मिला?
५) शराबी के हाथ में कितने रुपए थे?
६) सीली जगह में सोते हुए बालक ने क्या ओढ़ लिया?
७) बालक की आँखें किसकी सौगन्ध खा रही थीं?

II) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१) शराबी ठाकुर सरदारसिंह को कौन-कौन सी कहानियाँ सुनाता था?
२) शराबी को बच्चा कहाँ मिला? वह उसे अपने साथ क्यों लाया?
३) शराबी एक रुपए से क्या खरीदना चाहता था और बाद में क्या खरीद लिया?
४) शराबी के जीवन में मधुआ के आने के बाद क्या परिवर्तन आया?
५) मधुआ पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

* * * * * *

२. श्मशान

– मन्नू भंडारी

लेखिका परिचय :

हिन्दी कहानीकार मन्नू भंडारी का जन्म १९३१ ई. में मध्यप्रदेश के भानपुरा नामक गाँव में हुआ। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए आपने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रवेश लेकर वहीं से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। नई पीढ़ी की महिला कथाकारों में आपका विशिष्ट स्थान है। आपका विवाह हिन्दी साहित्यकार श्री. राजेन्द्र यादव से हुआ। आपने अपनी कहानियों में नारी जीवन की समस्याओं को मार्मिक ढ़ंग से रेखांकित किया है। आपकी रचना-शैली संयत और प्रवाहपूर्ण है। भाषा सजीव और आंडबरशून्य है।

आपके कहानी संग्रह – 'मैं हार गई', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'यही सच है', 'एक प्लेट सैलाब' आदि हैं।

पहाड़ी मनुष्य का परिचय देते हुए श्मशान से कहता है – 'जीवन की पूर्णता के लिए वह फिर-फिर प्रेम करता है। जीवित रहने की ललक के चलते ही वह हर वियोग झेल लेता है... व्यथा सह लेता है, क्योंकि सब से अधिक प्रेम तो मनुष्य अपने आप से करता है।' प्रस्तुत कहानी में मन्नू भंडारी ने इस सत्य को उजागर किया है।

मनुष्य की स्वार्थपरता, सुख लोलुपता एवं जीवन की वास्तविकता का परिचय कराने हेतु प्रस्तुत व्यंग्य रचना चयनित है।